BSES

# सभी खेल स्थलों पर बीएसईएस की तैयारियां पूरी

- जितनी जरूरत है, उससे दुगुनी की गई बिजली लोड की क्षमता

नई दिल्लीः 6 अगस्त, 2010। बीएसईएस ने अपने इलाके में आने वाले सभी 12 खेल स्थलों पर बिजली से संबंधित काम दिन–रात एक करके पूरे कर लिए हैं। ताकि बिजली आपूर्ति में किसी गड़बड़ी की वजह से खेलों में दिक्कत न आए, इसके लिए बीआरपीएल और बीवाईपीएल ने हर छोटे से छोटे तकनीकी पहलू का ध्यान रखा है। एक ओर खेल स्थलों पर विश्वस्तरीय बिजली व्यवस्था विकसित की गई है, तो दूसरी ओर केबल्स के लेकर, फीडर पिलर्स और पैनल्स– तमाम चीजों को बदलकर उनकी जगह पश्चिमी देशों में इस्तेमाल किए जाने वाले अत्याधुनिक उपकरण लगाए गए हैं। इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि खेल स्थलों पर बिजली के जितने लोड का अनुमान है, वहां उससे दुगुने लोड की क्षमता रखी जाए। इसका फायदा यह होगा कि यदि किसी खेल स्थल पर बिजली का लोड अचानक बहुत अधिक बढ़ जाता है, तो भी वह बढ़े हुए लोड को वहन करने में सक्षम होगा। खेल स्थलों पर बिजली संबंधित कार्यों पर करीब 74 करोड़ रूपये की लागत आई है।

9 खेल स्थल बीआरपीएल इलाके में हैं, जबकि 3 बीवाईपीएल इलाके में। इन में से 7 स्थलों पर खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी हैं, जबकि 3 स्थलों पर खेलों के प्रशिक्षण–कार्यक्रम होंगे, 1 स्थान खेल गांव के रूप में नजर आएगा, जबकि 1 जगह पर अंतरराष्ट्रीय मीडिया सेंटर होगा। बीएसईएस गेम्स वेन्यूज में बिजली के मामले में कोई रिस्क नहीं लेना चाहती और इसीलिए, बिजली के जितने लोड की जरूरत है, उससे दुगुनी क्षमता विकसित कर दी गई है।

<u>जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम</u>ः यहां खेलों के उद्‌घाटन और समापन समारोह होने हैं। इसके अलावा एथलेटिक्स, वेट लिफ्टिंग, और लॉन बॉल्स जैसे खेल भी यहां होंगे। इस लिहाज से यहां अन्य स्टेडियमों के मुकाबले अधिक बिजली लोड की जरूरत होगी। यहां होने वाले आयोजनों के आधार पर अनुमान लगाया गया था कि यहां करीब 12 एमवीए बिजली लोड की जरूरत होगी, लेकिन यहां की लोड–क्षमता बढ़ाकर 28 एमवीए कर दी गई है। इस पर करीब 5. 2 करोड़ रूपये की लागत आई।

<u>करनी सिंह रेंज</u>ः यहां शूटिंग प्रतियोगिताएं होनी हैं। यहां का बिजली लोड 2.5 एमवीए करने का अनुरोध किया गया था, लेकिन कंपनी ने लोड को और बढ़ाकर उसे सीधे 5 मेगावॉट कर दिया। इस पर 7. 70 करोड़ रूपये खर्च हुए।

<u>सिरीफोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स</u>ः यहां स्क्वैश और बैडमिंटन के मैच होने हैं। इस कॉम्प्लेक्स में 4.3 एमवीए बिजली लोड की जरूरत है, लेकिन कंपनी ने यहां 5 एमवीए की क्षमता विकसित कर दी है। इस पर 2. 04 करोड़ रूपये का खर्च आया।

<u>न्यू सिरीफोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स</u>ः यह विभिन्न खेलों के लिए प्रशिक्षण स्थल के तौर पर काम करेगा। यहां 852 केवीए बिजली लोड विकसित करना था, लेकिन बीएसईएस ने इसकी क्षमता बढ़ाकर 5 एमवीए कर दी है। इस पर 2. 77 करोड़ रूपये खर्च हुए।

<u>साकेत स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स</u>ः यह भी प्रशिक्षण स्थल के तौर पर काम करेगा। यहां 589 केवीए लोड की जरूरत बताई गई थी, पर यहां की लोड क्षमता बढ़ाकर 5 एमवीए कर दी गई है। लागत आई 5. 99 करोड़ रूपये।

<u>त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स</u>ः यहां नेटबॉल प्रतियोगिताएं होंगी। इस कॉम्प्लेक्स में 1.17 एमवीए लोड की जरूरत होगी, लेकिन उसे बढ़ाकर सीधे 5 एमवीए कर दिया गया है। खर्च हुए 8.4 करोड़ रूपये।

<u>आरके खन्ना स्टेडियम</u>ः यहां टेनिस प्रतियोगिताएं होंगी। बिजली का लोड 1.6 एमवीए तक होने का अनुमान है, लेकिन बीएसईएस ने 5 एमवीए की क्षमता वहां विकसित कर दी है। खर्च आया है, 1.3 करोड़ रूपये।

<u>यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स</u>ः यहां बैडमिंटन, और लॉन टेनिस प्रतियोगिताएं होनी हैं। अनुमानित बिजली लोड है 4.2 एमवीए, लेकिन 5 एमवीए की क्षमता विकसित की गई है। लागत आई 2.74 करोड़ रूपये।

<u>इंदिरा गांधी स्टेडियम</u> : साइक्लिंग, जिम्नास्टिक्स और रेस्लिंग जैसी प्रतियोगिताएं यहां होनी हैं। लोड होगा 11.8 एमवीए।

<u>इंटरनैशनल मीडिया सेंटर</u>ः चूंकि कॉमनवेल्थ गेम्स के दौरान दिल्ली में दुनियाभर के मीडियाकर्मियों का जमावड़ा होगा, इसलिए इस मीडिया सेंटर का बिजली लोड 7 एमवीए होने का अनुमान लगाया गया है। बीएसईएस ने इसका लोड बढ़ाकर 14 एमवीए कर दिया है। इस पर करीब 80 लाख रूपये की लागत आई।

<u>कॉमनवेल्थ गेम्स विलेज</u>ः अक्षरधाम मंदिर के पास स्थित कॉमनवेल्थ गेम्स विलेज में 66/11 केवी क्षमता का एक ग्रिड स्टेशन लगाया गया। यहां 25 एमवीए के एक ट्रांसफॉर्मर की जरूरत होगी, लेकिन इतनी ही क्षमता के दो ट्रांसफॉर्मर लगा दिए गए हैं, ताकि लोड कितना भी बढ़ जाए, बिजली व्यवस्था बहाल रहे। यदि एक ट्रांसफॉर्मर फेल भी हो जाता है, तो दूसरा स्वतः बैकअप के तौर पर काम करना शुरू कर देगा।

बीएसईएस प्रवक्ता के मुताबिक, तमाम बिजली व्यवस्थाओं व उपकरणों को सुपरवाइजरी कंट्रोल एंड डेटा एक्विजिशन (स्काडा) और ज्योग्राफिकल इंफर्मेशन सिस्टम (जीआईएस) से जोड़ दिया गया है। सिस्टम में कोई गड़बड़ी आते ही वह इन तकनीकों की पकड़ में

आ जाएगा और बीएसईएस कर्मी उसपर तुरंत कार्रवाई शुरू कर देंगे। फॉल्ट्स की जगह को ढूंढने में भी ये तकनीकें कारगर साबित होंगी।

*दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनी बीएसईएस अपने उपभोक्ताओं को गुणवत्तायुक्त बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।*

.......................................................................................................................................................................................

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: प्रशान्त दुआ
कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस– 39999870 / 9312007822

चंद्र पी कामत
कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस– 39999415 / 9350130304